

2009

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

परीक्षा के नाम की सील

हायर सेकण्डरी परीक्षा नियामक



- विषय कोड 001 परीक्षा का विषय वि. हिन्दी
- परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 12/03/09

- परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C, या D) अनिवार्यतः भरें कोड सेट U-2001 B

केन्द्र क्रमांक की सील

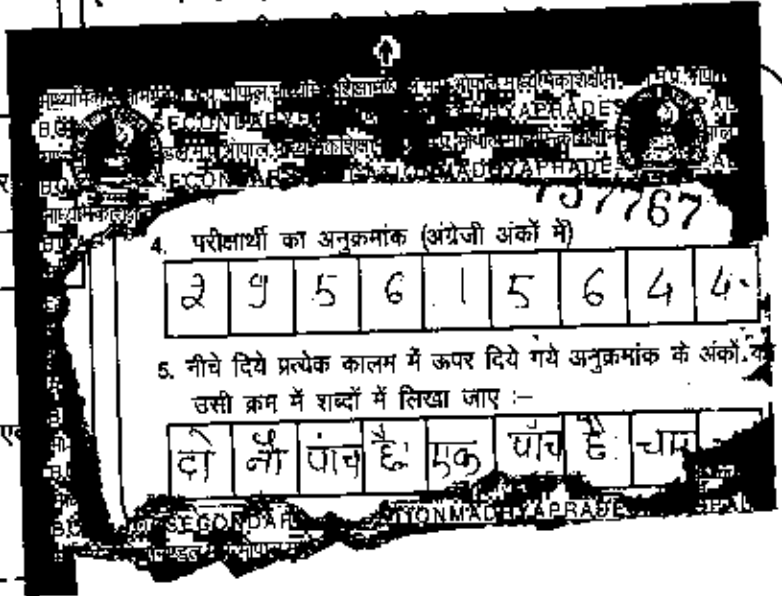
561002

पर्यवेक्षक/केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में X अंकों में

ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक 05 में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सही लिखा है।



4. परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

2 9 5 6 1 5 6 4 4

5. नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों के उसी क्रम में शब्दों में लिखा जाए :-

दो नौ पांच दस एक पांच दस चार

B  
S  
E  
M  
P

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक) Fatima

नाम Mrs. Tabassum Khan पद Lecturer

पता/संस्थान Govt. M.L.B. H.S. School Khandwa

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिका धस्या स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन किया पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कवर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक समान है एवं योग पूरक है।

हस्ताक्षर (परीक्षक)

परीक्षक क्रमांक

9210247

हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक)

दिनांक

हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक)

दिनांक

### परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न-पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :-

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छ	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रॉस किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

### परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाएँ मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

### मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

3  $\times$   $\square$  +  $\square$  =  $\square$

योग पूर्व पृष्ठ                      पृष्ठ 3 के अंक                      कुल अंक



प्रश्न 1) खाली स्थान भरी

(i) कृष्णभक्ति शारदा

(ii) गणेश जी

(iii) कबीर

(iv) श्रीकृष्ण

(v) मूरदास

प्रश्न 2) सही विकल्प चुनो

(i) (ख) अय में

(ii) (घ) बसंती और बहू को

(iii) (ग) बिजनौर से

(iv) (ग) रेडीमेट अहयक्ष

(v) (ख) व्यचपन के अनुभव

B  
S  
E  
M  
P

4

योग पूर्व २ अंक

+

पृष्ठ 4 के अंक

=

कुल अंक



प्रश्न 3 सत्य / असत्य लिखिये

(i) असत्य ✓

(ii) असत्य ✓

(iii) असत्य ✓

(iv) असत्य ✓

(v) सत्य ✓

प्रश्न 4 सही जोड़ें

(i) कठिन काल का प्रेत  
कहा जाता है।

केशवदास

(ii) हमें आक्रोहित या  
असह्य बताने वाले  
लोग हैं।

पश्चिमी देश

(iii) 'बढ़ सिपाही' कविता  
के रचयिता

विष्णुकान्त शास्त्री

(iv) झुकने की क्षम्य है।

वीर

B  
S  
E  
M  
P



पृष्ठ के अंकों का योग

5

या पूर्व पृष्ठ

+

पृष्ठ 5 क अथ

= कुल अ.



(V) 'पल्लव वसना' कहा गया है

सूखी डाली

प्रश्न 5) एक शब्द में उत्तर

(i) डॉ. श्याम सुंदर दुबे

(ii) अज-भाषा

(iii) रेल की पटरी की खतरा

(iv) महादेवी वर्मा

(v) गोलने

प्रश्न 6 कबीर ने शब्द की महिमा व्यक्त करते हुए कहा है कि हमें अपने मुख के बड़ी सावधानी पूर्वक शब्द निकालना चाहिए है। क्योंकि शब्द के न तो हाथ लेते हैं और न तो पाँव फिर भी लोग अर्थ का अनर्थ निकालते हैं। शब्द कभी तो किसी के लिये औषधि का कार्य करते हैं तो कभी किसी के को घायल कर देते हैं। इसीलिये हमें बहुत सोच समझकर बोलना चाहिए।

REMP

पृष्ठ नं

6

+

=



पान ५५२

पृष्ठ

कुल अंक

प्रश्न 9 आलोचना आलोचना का

अर्थ है कि

“कुसी चीज को शक्ति शक्ति देवना” अर्थात् किसी साहित्यिक रचना को पढ़कर उसके अपने-विकार व्यक्त करना ही आलोचना है। यह आधुनिक युग की देव है।

दो आलोचक

1) आचार्य रामचंद्र शुक्ल

2) महावीर प्रसाद त्रिवेदी

प्रश्न 11) जब देवकी के गर्भ में भगवान्

श्रीकृष्ण का अवतरण हो चुका

था तब देवकी को सबकुछ खड़ा ही

अच्छा लगने लगा उन्हें बामुनी की भीठी

देर सुनार दे रही थी मुक जिसे मनुकर

उन्हे ऐसा लग रहा था मानो वह किसी

अत्यंत ही विशाल व सुन्दर स्थान पर

बैठी है फिर मुक पल के लिये उन्हे

लगता की वटे वे सागर की लहरों

पर विराजमान है व लहर उन्हे झुली

झुला रही है वह अपने अंदर अत्यंत

ESMP

7

$$\boxed{\phantom{00}} + \boxed{\phantom{00}} = \boxed{\phantom{00}}$$

योग पूर्व पृष्ठ                      पृष्ठ 7 के अंक                      कुल अंक



है आनंद का अनुभव कर रही थी

प्रश्न 10. गौतम के चले जाने के पश्चात यशोधरा विरह के ताप से पीड़ित थी। हिमालय की छाया में रह कर भी यशोधरा का ताप इसी इलाक़े में ही पिघल रहा था क्योंकि यशोधरा का ताप तो अन्तरिम था जबकि हिमालय तो वाह्य ताप को शान्त करता है। यशोधरा का ताप तो केवल गौतम से मिलने के पश्चात ही पिघलेगा।

प्रश्न 12. शान्त रस जब किसी काव्य रचना को पढ़कर या सुनकर सत्य के मन में निर्वेद नामक स्थायी भाव की उत्पत्ति होती है तो उस काव्य रचना में शान्त रस होता है।  
शान्त रस का स्थायी भाव निर्वेद या शम है।

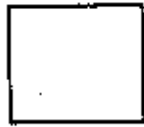
उदाहरण -

(1) शम नाम ही लूट है, लूट सके तो बूट।  
अंतकाल पहतायेगा, जब प्राण जायेगे बूट ॥

(2) अजमन करण कमल अविनाशी ।

B  
S  
E  
M  
P

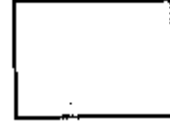
8



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 8 के अंक

कुल अंक



प्रश्न (13.) (अ) वाक्य में प्रयोग

आँरवे का तारा ~~बाम~~ शान्तिप्रिया का

~~इसी~~ इल्लोता लड़का है,  
इसीलिये वह उसकी आँरवे का तारा है।

अंधे की लाठी ~~वह बाम~~ चाचा के लिये  
तो उनका अतीजा कम  
ही अंधे की लाठी है।

(ब.) बुंदेली - जवाहरियर, शिष्ट, मुर्वा  
आदि।

भालवी इंदौर, देवास, ~~शतलाम~~ ~~मूलसौर~~  
आदि।

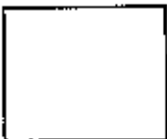
प्रश्न (14.) साहित्यिक पश्चिम

आचार्य राम चंद्र शुक्ल

दो स्थानों ~~चिन्तामणि~~, हिन्दी साहित्य  
का इतिहास

भाषा शैली आर्कस्य आचार्य रामचंद्र  
शुक्ल की भाषा संस्कृतनिक

B  
S  
N  
P



पृष्ठ के अंकों का योग

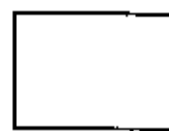
9



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 9 के अंक

कुल अंक



है। इनकी भाषा परिष्कृत है। भाषा में तत्सम शब्दों का बाहुल्य है। किंतु भाषा में तत्सम तद्भव शब्दों का भी प्रयोग किया है। कहीं-कहीं इन्होंने इन अपनी भाषा में उर्दू, काश्मी के शब्दों का भी सम्मिश्रण किया है। किंतु और फिर भी इनकी भाषा क्लिष्ट या दुस्त नहीं हुई है। इन्होंने रबड़ी बोली में स्पनाँस लिखी है। 'कौन' सा शब्द कदा अधिक चोट करेगा इसका इन्हें पूर्ण ज्ञान था। इनका एक एक शब्द मोती में माला की तरह सुगठित है।

इन्होंने प्रायः अपने निबंध पद्यात्मक शैली में लिखे हैं। कहीं कहीं इन्होंने आवात्मक शैली का भी उपयोग किया है। इन्होंने कई आलोचनाओं की लिखी हैं। इनकी स्पनाँसों में कहीं कहीं हास्य का छंद देखने को मिलता है।

साहित्य में स्थान हिन्दी साहित्य में इन्होंने अपनी स्पनाँसों के माध्यम से एक अलग ही धार छोड़ी है। इन्हें अपनी रचना चिंतामणि के लिये प्रसिद्ध भी किया गया है। ये साहित्य रूप वनस्थली के समे पुत्र हैं जिनकी सुगंध चारों ओर बिखर रही है।

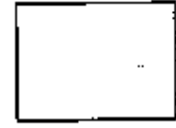
10



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 10 के अंक

कुल अंक



प्रश्न 15) कवि परिचय

सूरदास

दो स्थानों सूर सागर, साहित्य लक्ष्मी

आपपक्ष - सूरदास अकित्तकाल के श्रीकृष्ण कवि अर्थात् शारदा के कवि हैं। इन्हीं की कविता अधिकांश रचनाविज्ञान श्रीकृष्ण को आराध्य आराध्य आर्नकर की गई हैं। इन्होंने अपना काल हीन व अवधी भाषा में लिखा है। इनकी रचनाओं में दारुण भाव व अकित्त भाव देखने को मिलता है।

कलापक्ष - सूरदास जी की अधिष्ठाता रचनाओं में वात्सल्य रस, शृंगार रस व शांत रस देखने को मिलता है। अनुप्रास अलंकार इनकी प्रिय हैं। यद्यपि इन्होंने रूपक उपमा इत्येता अलंकारों का भी अलीकृति प्रयोग किया है। इनकी रचनाओं के प्रमुख हृद कोला, मुष्कलियाँ हैं। इनकी रचनाओं में प्रसाद गुण व माधुर्य गुण अलंकृत हैं।

B  
S  
E  
M  
P

  
पृष्ठ के अंकों का योग

11



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 11 के अंक

कुल अंक



साहित्य में स्थान औरदास जी वात्सल्य रस

के कुशल चिन्ते हैं।

वात्सल्य रस का जैसा वर्णन इन्होंने किया है

वैसा कहीं और देखने को नहीं मिलता है।

इसीलिए तो इन्हे सूर्य के समान कहा गया है।

"सूर सूर, तुलसी सति, उदुगत देशवदासी"

प्रश्न 16. संदर्भ, प्रसंग व्याख्या

ब अलका प्रकाश

बताने

संदर्भ प्रस्तुत अवतरण पाठ "तिमिर गेट

में चिरण आचरण" से लिया गया है।

अधिक लेखक है डॉ. अमान सुंदर कुबे।

प्रसंग प्रस्तुत गद्यांश में लेखक मानव जीवन

के प्रकाश रूपी गुणों के बारे में बात

रत है।

व्याख्या लेखक के अनुसार चि: दीपक, बिजली के

लट्टू तो केवल बाह्य प्रकाश फैलते हैं

किंतु वास्तविक प्रकाश तो हमें स्वयं हमारे

जीवन में छिपा में वह प्रकाश है।

मानव की सृजनशीलता का प्रकाश | मनुष्य

B  
S  
E  
M  
P

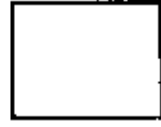


पृष्ठ के अंकों का योग

12



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 12 के अंक

कुल अंक



यदि आचरण व्यवहार, अच्छा हो  
 यदि वह परिष्कृत हो यदि वह कोमल  
 हृद्य का हो तो वह अपने चारों ओर  
 प्रकाश रूपी गुण बिखेर देता है इन लक्ष  
 गुणों की सलसलता से तो हम श्रुतिमौ व  
 प्रेम, उल्लास के अनेक लक्षण ले  
 जीवन का ऊँचा उठा, ऊँचा श्रेण उजियारे से  
 भरपूर बना सकते हैं।

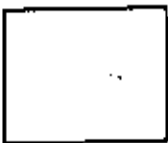
विशेष - खड़ी बोली  
 संस्कृत निष्ठा भाषा  
 ललित अध्यापन

प्रश्न 19) पद्यांश की व्याख्या

य इह इह असावो वा

संदर्भ प्रस्तुत पद्यांश " उद्धव प्रसंग " से  
 लिया गया है जिसके कवि " केशवदास "  
 हैं।

प्रसंग - प्रस्तुत पद्यांश में श्री गीर्णो - द्वारा  
 उद्धव के निर्गुण ज्ञान का विरोध  
 किया गया है।



पृष्ठ के अंकों का योग

B  
S  
E  
M  
P

13



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 13 के अंक

कुल अंक



B  
S  
E  
M  
P

आराम) → जेठवदाब जी के अनुसार जब श्रीकृष्ण के मित्र उद्भव निर्गुण ज्ञान की शिक्षा गोपियों को देते हैं। तो गोपिया कलती होती है उद्भव हमारा मन बहुत ही कोमल है व इर्षा के समान है आप अपने पत्थर से भी कठोर वक्तो को हमारे सामने से मत जोलिये अन्यथा हमारा मन रुपी इर्षा दूर जायेगा। पहले ही हमारे मन में एक श्रीकृष्ण बसा है। जिसने हमें क्ली का नली छोड़ा जब आपके वक्तो से हमारा इर्षा मन दूर जायेगा जिससे और श्रीकृष्ण हमारे मन में बस जायेगा जिससे हमारी विरह पीड़ा और बढ़ जायगी।

काल्य मौन्दर्षि वियोग सुगौर रस

शुभ भाषा

विरोधाभास अलंकार (यकमन मोहन - अतसो ना) में माधुर्य युग

उक्त 19. स्वनि विस्तारक अंज पर प्रतिबंध लगे हुए कलेक्टर को पत्र



पृष्ठ के अंकों का योग

14

योग पूर्व ६

+

पृष्ठ 14 के अंक

=

कुल अंक



प्रति,

जिला कलेक्टर महोदय,  
खंडवा म.उ.

विषय ध्वनि विस्तारक यंत्रों पर प्रतिबंध  
लگانे हेतु

महोदय,

मनु निवेदन है कि आज से  
कुछ समय साप्ताह पश्चात छात्रों को  
वार्षिक परीक्षा आरंभ होने वाली है। जिनसे  
छात्र अपनी तैयारियों में मग्न हैं। किंतु  
मोहल्ले के कुछ आवश्यक तत्व देर रात  
तक ध्वनि विस्तारक यंत्रों का उपयोग करते  
हैं। जो कि हमारी पढाई में बाधा पहुँचा  
रहे हैं।

अतः मनु निवेदन है कि ~~स्वीकृति~~  
शीघ्रताशीघ्र आप इन ध्वनि विस्तारक यंत्रों  
पर प्रतिबंध लगाने का कष्ट करें।  
धन्यवाद।

दिनांक 12/03/09

प्रार्थी

समस्त छात्रगण  
जिला खंडवा

B  
S  
E  
M  
P

[ ]

$$\boxed{\quad} + \boxed{\quad} = \boxed{1 - \quad}$$

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 15 के अंक

कुल अंक



B  
S  
E  
M  
P

प्रश्न 7.) फूल और मालिन दोनों ही बहुत कोमल हैं मधुवर्षण करते हैं यदि फूल को हम तोड़गे तो वह पुरजा जायेगा। और मालिन को भी कट्ट होगा फूल और मालिन को कभी न कभी नष्ट होना ही है और इस खरती जाने वाले प्रत्येक जीव को किसी न किसी दिन तो नष्ट होना ही है अतः हमें किसी को कट्ट नहीं पहुँचाना चाहिये।

प्रश्न 8. प्रयोग वादी कविता - प्रयोगवादी कविता का प्रारंभ अंग्रेज की सर रचना तारमल्लक के प्रकाशन में प्रारंभ हुआ विशेषताएं -

- 1.) नवीन छिम्बो व उपमानो का प्रयोग - प्रयोगवादी कविता में कविने ने नवीनो छिम्बो व उपमानो का प्रयोग किया।
- 2.) बौद्धिकता की प्रधानता - इस वाद में कल्पना के स्थान पर बौद्धिकता को प्रधान कविने ने अपनी रचनाओं में स्थान दिया।
- 3.) अश्लीलता का चित्रण - इस वाद की रचनाओं में अश्लीलता देखने को मिलती है।

16

$$\boxed{\quad} + \boxed{\quad} = \boxed{\quad}$$

पृष्ठ 16 के अंक                      कुल अंक



4) सरल, सहज, व्यंग्य युक्त भाषा - इल युग की  
 साधु बर्णन का चित्रण - कविताओं में प्रथम  
 को-चित्रण सहज सरल भाषा में किया, व्यंग्य  
 का पुट देखने को मिलता है

प्रश्न (20) निबंध

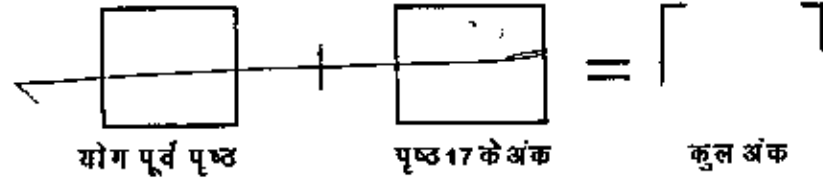
प्रदूषण : कारण और निदान

B  
S  
E  
M  
P

- 1) प्रस्तावना
- 2) प्रदूषण का अर्थ
- 3) प्रदूषण के प्रकार व कारण
- 4) निदान
- 5) उपसंहार

प्रस्तावना -  
 गंगा नदी मंकी हो गई है।  
 गलियों से बहकर आ रही है। वायु में  
 विशैली जैसे, खून व बरबु धुन चुकी दो  
 धातावरण विषाक्त हो गया और इन  
 सब हालतों में मानव अपना गुजर  
 बसर कैसे करे ? मनुष्य तो मनुष्य परतु  
 का भी जीना इमर होच गया है।  
 इसी को देखते हुए किसी ने मल्प ही  
 कहा है।

17



~~दूषित वायु, दूषित जल कैसे कैसे हो जीवन~~

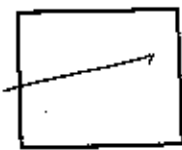
दूषित वायु, दूषित जल,  
कैसे ही जीवन मंगल।

शुद्ध वायु, शुद्ध जल,  
कैसे ही जीवन सफल ॥

B  
S  
E  
M  
P

प्रदूषण का अर्थ प्रदूषण का अर्थ है दूषित करना। जब हमारे वायु मंडल में, जल में, आदि में कुछ अवांछनीय दानिकारक तत्व प्रवेश करते हैं जो हमें प्रतिकूलता पहुंचाते हैं तो इसे ही प्रदूषण कहते हैं।

मानव का जन्म प्रकृति की सुरक्षित गोद में हुआ। उतने प्रारंभ से ही यह समझ लिया की प्रकृति के बिना उसका कोई अस्तित्व नहीं इसलिये वह इसे प्रकृति रक्षा मनाती रहा किंतु वर्तमान का गुरुत्त्व यह सब भूल चुका है। वह प्रकृति के कड़ुत मुकाम मुकाम पहुंचा रहा है। जिसके कारण आज वायु मंडल इतना दूषित है।

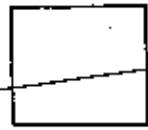


पृष्ठ के अंकों का योग

प्रदूषण के प्रकार या कारण सामान्यतः प्रदूषण चार प्रकार का

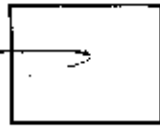
होता है। जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, सूर्यप्रदूषण

18



योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 18 के अंक

=

कुल अंक



स्वामी प्रदूषण / प्रदूषण के और भी प्रकार होने  
हैं जैसे स्वामी रेडियो धर्मी प्रदूषण आदि।

जल प्रदूषण

आज जल प्रदूषण हमारे देश  
की ही नहीं अपितु एक अन्तर्राष्ट्रीय अचलित  
समस्या को भी से मुक्त है। कारखानों से  
आने वाला कचरा सीधे नदियों में डाला जा  
रहा है। मनुष्य अपने पशुओं, बोर, आदि को  
नदियों में नहलाते हैं। अद्वितीय नदियों के किनारे  
घर भी कपड़े धोती है। गणेश मठोत्सव, दुर्गा  
पूजा के अवसरों पर भूतियों को नदियों में  
ही विमर्जित किया जाता है। इन पर चढ़ाई  
जाने वाली पूल मालाये नदियों में डाली जाती  
हैं। भारत में जितनी नदियाँ धार्मिक महत्व रखती  
हैं, उन्हीं सभी नदियों में सबसे ज्यादा गंदगी  
फामी गई है। वर्षा के पानी को भी संरक्षित  
नहीं किया जाता जिससे जल संचय और भी  
बढ़ा जा रहा है।

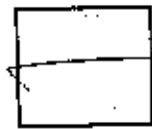
वायु प्रदूषण

वायु प्रदूषण भी आज एक अन्तर्राष्ट्रीय  
समस्या बन चुकी है। कारखानों

से निकलने वाला धुँआँ वायु मंडल को प्रदूषित  
कर रहा है। दिन पर दिन होते आते हैं हमको में  
प्रभुक्त व्यक्तियों की वजह से भी वायु प्रदूषण बढ़  
रहा है। युद्ध की आशंका की वजह से

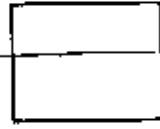
पृष्ठ के अंकों का योग

19



योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 19 के अंक

=



पृष्ठ 19



B  
S  
E  
M  
P

आधिगोश देश अपनी रक्षा के लिये किसानों, तोपे  
 कम बना रहा है और इनका परिष्कार कर रहा  
 है। जिससे वायु तो इतनी ही रही है साथ  
 साथ उन देशों का पैसा भी खर्च हो रहा है।  
 वायु प्रदूषण के कारण ही आज पृथ्वी को  
 हानिकारक पराबैंगनी विकिरणों से बचाने वाली  
 ओजोन पर्त नष्ट होती जा रही है। यह हिंडू  
 अंतरिक्ष मंदिरों के ऊपर डेरा गया। इनका  
 मुख्य कारण वायुमण्डल में उपस्थित क्लोरोफ्लोरो  
 कार्बन है। यह ओजोन से रिया कर इसे  
 ऑक्सीजन में परिवर्तित कर देती है जिससे  
 ओजोन पर्त नष्ट हो जाती है।

स्वनि प्रदूषण - स्वनि प्रदूषण पहले कुछ दशकों  
 केवल महानगरों तक ही सीमित  
 था किंतु आज यह छोटे-छोटे शहरों में भी  
 अपने पांव फेर चुका है। स्वनि विस्तारक जैसे  
 यंत्र, वाहनों का बढ़ता प्रयोग आदि तत्व इसके  
 कारण हैं। स्वनि प्रदूषण से मानव शक्ति में  
 तनाव बढ़ता है। मिररि इसी का कारण है।  
 अधिक स्वनि प्रदूषण या शोर से मनुष्य बहरा  
 हो सकता है।



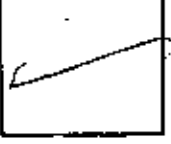
पृष्ठ के अंकों का योग

मृदा प्रदूषण - आज देश का हर किसान अपने  
 खेत से अधिक से अधिक फसल

ਮਾਂ ਤੇ ਪਿਤਾ, ਪੁੱਤ੍ਰ ਤੇ ਧੀ, ਸਹੁੰਦਾਰ ਤੇ ਸਹੁੰਦਾਰੀ

੨

ਮੁੱਲ 10 ਪੈਸੇ



ਮਾਂ ਤੇ ਪਿਤਾ ਦੋ ਆਪਣੇ ਆਪਣੇ ਘਰ ਵਿੱਚ ਰਹਿਣ ਲੱਗੇ। ਪੁੱਤ੍ਰ ਤੇ ਧੀ ਵੀ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਘਰਾਂ ਵਿੱਚ ਰਹਿਣ ਲੱਗੇ। ਪੁੱਤ੍ਰ ਨੇ ਆਪਣੇ ਘਰ ਵਿੱਚ ਕੁਝ ਕੁਝ ਕੰਮ ਕੀਤੇ। ਧੀ ਨੇ ਆਪਣੇ ਘਰ ਵਿੱਚ ਕੁਝ ਕੁਝ ਕੰਮ ਕੀਤੇ। ਪੁੱਤ੍ਰ ਤੇ ਧੀ ਦੋ ਆਪਣੇ ਆਪਣੇ ਘਰ ਵਿੱਚ ਰਹਿਣ ਲੱਗੇ। ਪੁੱਤ੍ਰ ਨੇ ਆਪਣੇ ਘਰ ਵਿੱਚ ਕੁਝ ਕੁਝ ਕੰਮ ਕੀਤੇ। ਧੀ ਨੇ ਆਪਣੇ ਘਰ ਵਿੱਚ ਕੁਝ ਕੁਝ ਕੰਮ ਕੀਤੇ।

ਪੁੱਤ੍ਰ ਤੇ ਧੀ ਦੋ ਆਪਣੇ ਆਪਣੇ ਘਰ ਵਿੱਚ ਰਹਿਣ ਲੱਗੇ। ਪੁੱਤ੍ਰ ਨੇ ਆਪਣੇ ਘਰ ਵਿੱਚ ਕੁਝ ਕੁਝ ਕੰਮ ਕੀਤੇ। ਧੀ ਨੇ ਆਪਣੇ ਘਰ ਵਿੱਚ ਕੁਝ ਕੁਝ ਕੰਮ ਕੀਤੇ। ਪੁੱਤ੍ਰ ਤੇ ਧੀ ਦੋ ਆਪਣੇ ਆਪਣੇ ਘਰ ਵਿੱਚ ਰਹਿਣ ਲੱਗੇ। ਪੁੱਤ੍ਰ ਨੇ ਆਪਣੇ ਘਰ ਵਿੱਚ ਕੁਝ ਕੁਝ ਕੰਮ ਕੀਤੇ। ਧੀ ਨੇ ਆਪਣੇ ਘਰ ਵਿੱਚ ਕੁਝ ਕੁਝ ਕੰਮ ਕੀਤੇ।

ਪੁੱਤ੍ਰ ਤੇ ਧੀ ਦੋ ਆਪਣੇ ਆਪਣੇ ਘਰ ਵਿੱਚ ਰਹਿਣ ਲੱਗੇ। ਪੁੱਤ੍ਰ ਨੇ ਆਪਣੇ ਘਰ ਵਿੱਚ ਕੁਝ ਕੁਝ ਕੰਮ ਕੀਤੇ। ਧੀ ਨੇ ਆਪਣੇ ਘਰ ਵਿੱਚ ਕੁਝ ਕੁਝ ਕੰਮ ਕੀਤੇ। ਪੁੱਤ੍ਰ ਤੇ ਧੀ ਦੋ ਆਪਣੇ ਆਪਣੇ ਘਰ ਵਿੱਚ ਰਹਿਣ ਲੱਗੇ। ਪੁੱਤ੍ਰ ਨੇ ਆਪਣੇ ਘਰ ਵਿੱਚ ਕੁਝ ਕੁਝ ਕੰਮ ਕੀਤੇ। ਧੀ ਨੇ ਆਪਣੇ ਘਰ ਵਿੱਚ ਕੁਝ ਕੁਝ ਕੰਮ ਕੀਤੇ।

P  
M  
E  
S  
B



ਮੁੱਲ 10 ਪੈਸੇ      ਮੁੱਲ 20 ਪੈਸੇ      ਮੁੱਲ 10 ਪੈਸੇ

$$\square = \square + \square$$

21

$$\boxed{\text{योग पूर्व ५}} + \boxed{\text{पृष्ठ अंक}} = \boxed{\text{कुल अंक}}$$



सौर ऊर्जा का उपयोग करना चाहिये, धुएँ रहित  
 वाहनो का प्रयोग करना चाहिये। कारखानो से  
 निकलने वाले पानी को फिल्टर करके नदियो  
 में बहाना चाहिये। रासायनिक कीटनाशको व  
 उर्वरको का उपयोग नही करना चाहिये अपितु इनके  
 स्थान पर खाद का उपयोग करना चाहिये।  
 खानि विस्तारक पत्रो पर प्रतिबंध लगाना चाहिये  
 अरब ने भी इस उद्देश्य से कई कानून बनाये है  
 उन विषय ने जो अमेरिकी राष्ट्रपति ने ~~किया~~  
 ने ओजोन परत को नुकसान पहुँचाने वाले  
 क्लोरो फ्लोरो कार्बन युक्त पदार्थो पर प्रतिबंध  
 लगा दिया था।

B  
S  
E  
M  
P

उपसंहार - प्रदूषण आज पूरे विश्व के लिये  
 धातक साबित हो चुका है इसके इसे  
 कम करने व नष्ट करने के लिये किसी एक व्यक्ति  
 को या किसी एक देश को नही अपितु पूरे विश्व  
 को आगे जाना चाहिये। वरना हमारी अगली  
 पीढी हमें हमेशा कोसती ही रहेगी। यही हमने  
 जेसम रहते इसे खत्म नही किया तो ये  
 हमें अवश्य खत्म कर देगा।

पृष्ठ के अंको का योग

पृष्ठ 18.) अपठित गद्यांश

22

$$\boxed{\quad} + \boxed{\quad} = \boxed{\quad}$$

योग पूर्व पृष्ठ                      पृष्ठ 22 के अंक                      कुल अंक



(i) शीर्षक - "धर्म-पालन"

(ii) सारांश - धर्म के पालन में कई कठिनाई आती हैं। मनुष्य की आत्मा हमेशा सही सलाह व विवेक डेती है वही इतनी ओर आनन्द व सच्चाई पन होता है हमें धर्म आत्मा की बात मानकर धर्म का पालन करना चाहिये अन्यथा हम कली के वही रहेंगे।

(iii) धर्म पालन के मार्ग में बाधाएं

- (1) चित्त की चंचलता
2. उद्वेग की आधिपत्या
- (3) मन की निर्बलता

B  
S  
E  
M  
P

5

पृष्ठ के अंकों का योग

23

$$\square + \square = \square$$

योग पूर्व पृष्ठ      पृष्ठ 23 के अंक      कुल अंक



B  
S  
E  
M  
P

पृष्ठ के अंकों का योग

24

+

=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 24 के अंक

कुल अंक

B  
S  
E  
M  
P

पृष्ठ के अंकों का योग